महादेवी वर्मा का साहित्य परिचय का अध्ययन

Dr. Pushpa Antil, Associate Professor, Government College For Girls, Sector-14, Gurugram (Haryana)
Email-pushpaantil27@gmail.com

सारांश : भारतीय साहित्य जगत को अपनी लेखनी से समृद्ध करने वाली लेखिका ***महादेवी वर्मा (Mahadevi Verma)*** हिंदी साहित्य के छायावाद काल के प्रमुख 4 स्तम्भों में से एक के रूप में अमर हैं। हिंदी साहित्य में उनकी एक सशक्त हस्ताक्षार के रूप में पहचान है और छायावादी काव्य के विकास में इनका अविस्मरणीय योगदान रहा है। साहित्य और संगीत का अद्‌भुत संयोजन करके गीत विधा को विकास की चरम सीमा पर पहुंचा देने का श्रेय महादेवी को ही है। कवि निराला, ने उन्हें ***'हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती'*** की उपमा से भी सम्मानित किया है। वह हिंदी साहित्य में वेदना की कवयित्री के नाम से जानी जाती हैं एवं आधुनिक हिंदी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तक भी मानी जाती हैं। **महादेवी वर्मा** को भारत सरकार द्वारा वर्ष 1956 में 'पद्मभूषण' से तथा वर्ष 1988 में 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया है। हिन्दी **साहित्य** सम्मेलन द्वारा उन्हें 'भारतेन्दु पुरस्कार' प्रदान किया गया है। वर्ष 1982 में काव्य संकलन "यामा" के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

शब्द संकेत : **महादेवी वर्मा, हिंदी, साहित्य**

परिचय: महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जनपद में सन 1907 ई० में होलिकोत्सव के दिन हुआ था. इनके पिता गोविन्द प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्रधानाचार्य और माता हेमरानी विदुषी और धार्मिक स्वभाव की महिला थी.

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इंदौर में और उच्च शिक्षा प्रयाग में सफल हुई थी. संस्कृत में एम. ए. उत्तीर्ण करने के बाद ये प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्य हो गयी.

इनका विवाह छोटी आयु में ही हो गया था. इनके पति डॉ थे. इन्होने नारियो की स्वतंत्रता के लिए सदैव संघर्ष किया और अधिकाकारो की रक्षा के लिए नारी का शिक्षित होना आवश्यक बताया.

ये प्रयाग में ही रह कर जीवनपर्यन्त साहित्य - साधना करती रही. महादेवी वर्मा जी की मृत्यु 11 सितम्बर सन 1987 ई० को हो गयी और ये इस असार - संसार से विदा हो गयी. भले ही आज ये हमारे बिच नहीं है लेकिन इनके गीत काव्य - प्रेमियों के मानस पटल पर सदैव विराजमान रहंगे.

महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय: एक साहित्य से भरपूर, वातावरण में पली बढ़ी युवा महादेवी वर्मा ने बहुत ही कम उम्र में काव्य लेखन की ओर स्वाभाविक रूप से एक जुनून विकसित किया। हालाँकि महादेवी ने अपनी पहली कविता 7 साल की उम्र में लिखी थी, लेकिन वह अपनी कविता और अन्य लेखन को छिपा कर रखती थीं। जब उनकी सहेली और सुप्रसिद्ध कवियित्री ***सुभद्रा कुमारी चौहान (Subhadra Kumari Chauhan)*** को उनके लेखन का पता चला, तब महादेवी की प्रतिभा सामने आई।

जैसा कि उस समय का चलन था, 9 साल की उम्र में महादेवी की शादी एक डॉक्टर स्वरूप नारायण वर्मा से कर दी गई थी, जिसकी स्मृति कुछ इन शब्दों में वह दर्ज़ करती हैं:

'बारात आई तो बाहर भागकर हम सबके बीच खड़े होकर बारात देखने लगे। व्रत रखने को कहा गया तो मिठाई कमरे में बैठकर खूब मिठाई खाई। रात को सोते समय नाउन ने गोद में लेकर फेरे दिलवाए होंगे, हमें कुछ ध्यान नहीं है। प्रातः आंख खुली तो कपड़े में गांठ लगी देखी तो उसे खोलकर भाग गए।

अब इसे महादेवी का विद्रोही मन कहा जाए या अति-संवेदनशील हृदय, महादेवी पिंजड़े की नहीं रेगिस्तान की चिड़िया थीं और सांसारिक जीवन से विरक्ति के कारण उन्होंने शादी के बंधन में बंधना मंज़ूर नहीं किया

महादेवी, उन प्रथम भारतीय कवित्रियों में से एक हैं जिन्होंने अपने साहित्य में नारी सशक्तिकरण के प्रासंगिक मुद्दे को न केवल स्पर्श किया, बल्कि विस्तार से संबोधित करने का साहस किया।

फ्रांसीसी लेखिका ***सिमोन डी बेवॉयर (Simone de Beauvoir)*** के अपनी प्रभावशाली पुस्तक, ***द सेकेंड सेक्स (1949) (The Second Sex (French: Le Deuxième Sexe)*** जारी करने से कई साल पहले, भारत में महादेवी वर्मा ने 1930 के दशक में चांद जैसी पत्रिकाओं के लिए महिलाओं के उत्पीड़न पर शक्तिशाली

निबंधों की एक श्रृंखला लिखी थी। ये निबंध 1942 में प्रकाशित उनकी पुस्तक श्रृंखला की कड़ियाँ में एकत्र किये गए हैं।

छायावाद के चार महान कवियों में महादेवी वर्मा का भी नाम आता है. इन्होने मैट्रिक के बाद ही काव्य रचना शुरू कर डी थी.

ये दु:खी और पीड़ित व्यक्तियों को प्रेम एवं सहानुभूति से प्रभावित करती रही. महादेवी वर्मा का नारियो के प्रति विशेष दृष्टिकोण एवं भावुकता इनके अन्दर विद्दमान थी.

महादेवी वर्मा जी ने चाँद नामक पत्रिका का संपादन भी किया है जिसमे उन्हें विशेष प्रसिद्धी प्राप्त हुई. महदेवी वर्मा जी ने नारियो के लिए सदैव संघर्ष किया है. इन्होने नारियो की शिक्षा पर विशेष जोर दिया है.

इन्होने प्रयागराज में ही रह कर साहित्य साधना की. महादेवी वर्मा जी ने विद्दापीठ में प्राचार्य के पद पर भी कार्य किये है. इनके काव्य , काव्य प्रेमियों के लिए अमृत का कार्य करते थे.

महादेवी का शुद्ध विचारपरक **गद्य** भी मात्रा की दृष्टि से कम नहीं है। 'चाँद' के नारी-जागरण से सम्बद्ध सम्पादकीय, काव्य-संकलनों का पक्ष प्रस्तुत करने वाली भूमिकाएँ, 'काव्य-कला', 'छायावाद', 'रहस्यवाद', 'गीतकाव्य', जैसे **साहित्यिक** विषयों पर लिखे गये निबन्ध उनके **गद्य** लेखन का महत्वपूर्ण अंग हैं।

'हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती'

महादेवी जी का गद्य और पद्य दोनों पर ही समानाधिकार था । नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा उनके प्रसिद्ध गीत सग्रह हैं । अतीत की स्मृतियां, शृंखला की कड़ियां, पथ के साथी आदि उनके रेखाचित्र संस्मरण निबन्ध से सम्बन्धित संग्रह हैं । वहीं महादेवीजी ने श्रेष्ठ कहानियां भी लिखीं । पशु-पक्षी जगत् पर उनकी मार्मिक कहानियां अत्यन्त जीवन्त हैं।

कितनी करूणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग
गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग
आँसू लेते वे पथ पखार
जो तुम आ जाते एक बार

सन्दर्भ :-

1. आधुनिक काव्य विवेचन मानविकी विद्यापीठ , पृष्ठ 117
2. छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि , सुषमा पॉल
3. महादेवी का काव्य में लालित्य विधान , डॉ . मनोरमा शर्मा साहित्य संस्थान , कानपुर , प्र0 सं0 1976
4. छायावाद का काव्य शिल्प , प्रतिमा कृष्ण बल राधा कृष्ण प्रकाशन , दिल्ली 1971
5. आधुनिक हिन्दी कविता , डॉ . नंद किशोर नवल